सांध्य दैनिक
4PM
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 10 ● अंक: 257 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 24 अक्टूबर, 2024
मूल्य ₹ 3/-
जिद...सच की

किसी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देना इतना मुश्किल नहीं है, लेकिन उस इंसान को खोज पाना मुश्किल है जो आपकी कुर्बानी का सम्मान करे।
–ब्रह्माकुमारी शिवानी

दूसरे टेस्ट में न्यूजीलैंड ने की मजबूत... 7 | महाराष्ट्र की सीट शेयरिंग में अपने... 3 | मेरे रहते बिहार में कोई दंगा... 2

अखिलेश यादव संभालेंगे मोर्चा कवरिंग फायर देंगे राहुल गांधी

नया अध्याय लिखेंगे यूपी के दो लड़के

» बात सीट की नहीं, बात जीत की है : अखिलेश
» बीजेपी को पटखनी देने का सपा का बड़ा प्लान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। 'बात सीट की नहीं जीत की है' समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार देर रात इस बात का खुलासा कर दिया था कि यूपी में बीजेपी को सीधे टक्कर समाजवादी पार्टी ही देगी। कांग्रेस इस उपचुनाव में सिर्फ और सिर्फ सपा को कवरिंग फायर देगी। जिससे यूपी उपचुनाव में बीजेपी को लोकसभा चुनाव की तरह एक बार फिर से पटखनी दे पाए।

यूपी उपचुनाव में समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव एक बार फिर उसी राजनीति से बीजेपी को पटखनी देने का प्लान कर रहे हैं जिस राजनीति के तहत स्व. मुलायम सिंह यादव ने समाजवादी पार्टी को बुलंदियों पर पहुंचा दिया है। उसी विरासत को अखिलेश ने संभालते हुए उन्ही की धोबिया पछाड़ वाली राजनीति से बीजेपी को पटखनी देने का बड़ा प्लान तैयार कर लिया है। अखिलेश यादव की रणनीति के आगे जो कांग्रेस कल तक उपचुनाव में 5 सीटे मांग रही थी वही कांग्रेस अब यूपी में बिना किसी शर्त समाजवादी पार्टी को मजबूत के साथ गठबंधन धर्म को निभाते हुए सपा को जिताने का काम करेगी। देर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जब सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखा तो एक तरफ इंडिया गठबंधन पूरी तरह एकजुट है ये संदेश यूपी को दिया तो वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस की तारीफ करने में भी वे कोई कमी नहीं छोड़ी। अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा कि बात 'सीट की नहीं\बात जीत की है' इस रणनीति के तहत 'इंडिया गठबंधन' के संयुक्त प्रत्याशी सभी 9 सीटों पर समाजवादी पार्टी के चुनाव चिन्ह 'साइकिल' के निशान पर चुनाव लड़ेंगे। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी एक बड़ी जीत के लिए एकजुट होकर, कंधे से कंधा मिलाकर साथ खड़ी है। इंडिया गठबंधन इस उपचुनाव में, जीत का एक नया अध्याय लिखने जा रहा है। कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से लेकर बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं के साथ आने से समाजवादी पार्टी की शक्तियां कई गुना बढ़ गयी हैं। दरअसल पिछले कई चुनावों से ये तय हो गया है की यूपी में बीजेपी को अगर कोई सीधी टक्कर दे सकता है तो वह है समाजवादी पार्टी। समाजवादी पार्टी ही वो पार्टी है जो बीजेपी की आंख में आंख मिलाकर हर सीट पर चुनाव लड़ सकती है। सबको पता है कि इस उपचुनाव में अपनी जीत को लेकर बीजेपी हर साम-दाम-दंड-भेद सब लगा डालेगी क्योंकि बीजेपी को यूपी में एक बार फिर से मैसेज देना है कि लोकसभा चुनाव में स्थिति दूसरी थी लेकिन विधानसभा में उसकी पकड़ अभी भी मजबूत है। और इसी भ्रम को तोड़ने के लिए समाजवादी पार्टी पूरी मजबूती के साथ चुनाव में उतरने का मन बना चुकी है जिसमें कांग्रेस उसे कवरिंग फायरिंग के तौर पर मदद करेगी।

9 ▶ सीटों पर उपचुनाव में सपा के प्रत्याशी

कांग्रेस यूपी में बिना शर्त सपा को मजबूत करेगी

कांग्रेस ने भी प्रेस कांफ्रेंस कर दिया समर्थन

यूपी उपचुनाव में बसपा ने भी 8 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे लेकिन बसपा ने अलीगढ़ की खैर सीट पर प्रत्याशी की घोषणा नहीं की। लोकसभा चुनाव में हार के बाद बसपा की उपचुनाव में कड़ी परीक्षा।

बीजेपी ने भी 8 सीटों पर खोले अपने पत्ते

उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए बीजेपी ने आखिरकार अपने पत्ते खोल दिए हैं। बीजेपी ने अपने कोटे की 9 में से 8 सीटों पर उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर दिया है। सीसामऊ सीट से सुरेश अवस्थी को बनाया प्रत्याशी। बीजेपी ने भी जिस तरह से उम्मीदवार उतारे हैं, उसमें दलित और पिछड़ों पर सबसे ज्यादा दांव खेला है। बीजेपी ने सपा के पीडीए फॉर्मूले को काउंटर करने के लिए 7 में से 5 सीट पर दलित और ओबीसी समाज से कैंडिडेट उतारकर तगड़ी चुनौती देने की रणनीति बनाई है।

“'बात सीट की नहीं जीत की है' इस रणनीति के तहत 'इंडिया गठबंधन' के संयुक्त प्रत्याशी सभी 9 सीटों पर समाजवादी पार्टी के चुनाव चिन्ह 'साइकिल' के निशान पर चुनाव लड़ेंगे। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी एक बड़ी जीत के लिए एकजुट होकर, कंधे से कंधा मिलाकर साथ खड़ी है। इंडिया गठबंधन इस उपचुनाव में, जीत का एक नया अध्याय लिखने जा रहा है।
अखिलेश यादव, सपा प्रमुख

“उत्तर प्रदेश में 10 में से 9 सीटों पर उपचुनाव होने जा रहे हैं लेकिन आज का समय अपने संगठन या पार्टी को बचाने का नहीं है, ये समय संविधान और भाईचारे की रक्षा करने का है। इसे ध्यान में रखकर कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने यह फैसला लिया है कि उत्तर प्रदेश उपचुनाव में कांग्रेस अपने उम्मीदवार नहीं उतारेगी। हम INDIA गठबंधन के उम्मीदवारों की विजय के लिए प्रयासरत रहेंगे
– अविनाश पांडेय

सपा की जातीय बिसात को बीजेपी ने बना लिया हथियार

उपचुनाव में बीजेपी ने सीट के जातीय समीकरण के लिहाज से उम्मीदवारों के नाम का ऐलान किया है। बीजेपी ने उपचुनाव में सबसे ज्यादा चार ओबीसी समुदाय से चार प्रत्याशी उतारे हैं तो दो ब्राह्मण, ठाकुर और दलित समुदाय से भी एक-एक उम्मीदवार दिए हैं। बीजेपी ने ओबीसी समुदाय से जिन चार लोगों को टिकट दिया है, उसमें ओबीसी की चार अलग-अलग जातियां हैं। इस तरह बीजेपी ने सपा के पीडीए फॉर्मूले को पूरी तरह काउंटर करने की स्ट्रैटेजी बनाई है। इतना ही नहीं सवर्ण समुदाय से दो प्रत्याशी दिए हैं, उसमें एक ब्राह्मण और ठाकुर समुदाय पर भरोसा जताया है। बीजेपी ने उपचुनाव में अपने कोर वोटबैंक को साधे रखते हुए ओबीसी को साधने की स्ट्रैटजी है।

नीतीश कुमार और गिरिराज पर जमकर बरसे लालू यादव, कहा

'मेरे रहते बिहार में कोई दंगा फसाद नहीं करा सकता'

» मुझे भाजपा के शासन और नीतीश शासन में कोई अंतर नहीं दिखता : लालू

» कहा- हिंदू-मुस्लिम सब एक हैं

» बोले- राज्य में जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए नीतीश जिम्मेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर राज्य के विभिन्न हिस्सों में भाजपा नेता द्वारा दिए जा रहे भड़काऊ भाषणों को लेकर निशाना साधा। लालू ने गिरिराज पर आरोप लगाया कि वो इस तरह की बातें करने के आदी हैं। लालू यादव ने जेडी(यू) सुप्रीमो पर निशाना साधते हुए कहा, मुझे भाजपा के शासन और उनके (नीतीश) शासन में कोई अंतर नहीं दिखता। लालू यादव ने आगे कहा कि, जहां तक गिरिराज सिंह का सवाल है, उन्हें इस तरह की बात करने की आदत है। वह ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पाते हैं।

लालू ने यह भी कहा कि उनके रहते कोई भी दंगा-फसाद नहीं करा सकता है। हिंदू और मुस्लिम सब एक हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए नीतीश कुमार जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा, मुट्ठी भर भाजपा नेता बिहार में सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट नहीं कर सकते। हिंदू और मुसलमान लंबे समय से एक साथ रहते आए हैं और आगे भी रहेंगे। बता दें कि गिरिराज सिंह ने सीमांचल में हिंदू स्वाभिमान यात्रा निकाली थी। इस दौरान उन्होंने पूर्णिया, अररिया, कटिहार और किशनगंज जैसे मुस्लिम बहुल्य जिलों में जाकर हिंदुओं से एकजुट होने की अपील की थी।

इस यात्रा के दौरान अररिया से बीजेपी सांसद प्रदीप कुमार सिंह का एक बयान भी विवादों में घिर गया। प्रदीप कुमार सिंह ने कहा, अगर अररिया में रहना है तो हिंदू बनना होगा। इस बयान पर काफी हंगामा हुआ। हालांकि बाद में सांसद ने स्पष्ट किया कि वह जाति-भेद से परे हिंदू एकता की बात कर रहे थे और किसी अन्य धार्मिक समुदाय को निशाना नहीं बना रहे थे।

तेजस्वी ने भी बोला था तीखा हमला

इससे पहले तेजस्वी यादव ने भी गिरिराज सिंह और अररिया सांसद प्रदीप सिंह पर निशाना साधते हुए कहा था कि भाजपा के एक सांसद ने बिहार में माहौल बिगाड़ने के लिए भड़काऊ बयान दिया और उस सांसद को नीतीश कुमार ने अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया करा दी। इस देश की मिट्टी में सबकी महक और आजादी में सबका योगदान है. मैं हरेक व्यक्ति को भरोसा दिलाता हूं कि जब तक मेरी सांस है, मैं बिहार को सांप्रदायिकता की आग में झोंकने वाले हरेक व्यक्ति के सामने डट कर खड़ा रहूंगा और मुसलमानों की तरफ बुरी नजर से देखने वालों की ईंट से ईंट बजा देंगे।

द्रमुक गठबंधन में पार्टियों के बीच केवल बहस होती है दरार नहीं है : स्टालिन

» कहा-यह लोगों का गठबंधन है केवल विचारधारा पर आधारित गठबंधन नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन कल चेन्नई में एक कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने इस कार्यक्रम को संबोधित भी किया। सीएम स्टालिन ने कहा कि तमिलनाडु में द्रमुक नेतृत्व वाला गठबंधन विचारधारा पर बना है। उन्होंने आगे बताया कि पार्टियों के बीच बहस हो सकती है, लेकिन इनके बीच कोई दरार नहीं है। द्रमुक नेता ने यह स्पष्ट किया कि यह गठबंधन केवल चुनाव के लिए नहीं बना है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए तमिलनाडु सीएम एमके स्टालिन ने कहा, हमारा गठबंधन केवल चुनाव के लिए नहीं बना है। सत्ता हथियाने या पद के लालच में यह फर्जीवाड़ा नहीं किया गया है। आपको यह नहीं बूलना चाहिए कि हमारा गठबंधन विचारधारा पर बना है। पार्टियों के बीच बहस हो सकती है, लेकिन इनमें तोई दरार नहीं है और ऐसा कभी भी नहीं होगा। यह लोगों का गठबंधन है, यह केवल विचारधारा पर आधारित गठबंधन नहीं है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि न केवल 2026 के विधानसभा चुनाव में बल्कि भविष्य के किसी भी चुनावों में द्रमुक ही विजेता होगी और इसमें कोई शक नहीं है। बता दें कि कांग्रेस, लेफ्ट, वाइको के नेतृत्व वाली एमडीएमके और विदुथलाई चिरुथिगल काची ये सभी द्रमुक की गठबंधन पार्टियां हैं।

हाईकोर्ट की ईडी और सरकार को फटकार

आदेश के बावजूद भी गिरफ्तार नहीं हुए धर्म सिंह छौक्कर

» छौक्कर और उनके बेटों पर धोखाधड़ी व जालसाजी के कई आपराधिक मामले हैं दर्ज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़ पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने समालखा निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व विधायक धर्म सिंह छौक्कर को गिरफ्तार करने के आदेश के बावजूद उनकी गिरफ्तारी न होने पर हरियाणा सरकार व ईडी को जमकर फटकार लगाई है। हाईकोर्ट ने अब उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी होने के बावजूद गिरफ्तार नहीं होने को लेकर दाखिल याचिका को मंजूर करते हुए उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया है। इस मामले में विस्तृत आदेश आना अभी बाकी है।

सामाजिक कार्यकर्ता वीरेंद्र सिंह ने याचिका में दावा किया है कि गैर-जमानती वारंट जारी होने के बावजूद कानून प्रवर्तन एजेंसियां कार्रवाई करने में विफल रही हैं। छौक्कर चुनाव से पहले निर्वाचन क्षेत्र में खुलेआम घूम रहे थे और प्रचार कर रहे थे। छौक्कर और उनके बेटों पर धोखाधड़ी और जालसाजी से संबंधित कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। आरोप लगाया गया है कि समालखा सीट से पूर्व विधायक धर्म सिंह छौक्कर कानून के प्रावधान को दरकिनार कर रहे हैं और गिरफ्तारी के डर के बिना उन्होंने चुनाव लड़ा।

पेड़ों को गिराने की दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर हमें खेद है : एलजी

» 16 फरवरी के आसपास शुरू हो चुका था पेड़ों को गिराने का कार्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दिल्ली के उपराज्यपाल (एलजी) वीके सक्सेना ने दिल्ली रिज वन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई से जुड़े मामले में अपने आचरण का बचाव करते हुए सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर किया है। उन्होंने बताया कि पेड़ों की कटाई शुरू होने के बाद ही उन्हें पेड़ों की कटाई के लिए अदालत की पूर्व अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता के बारे में पता चला।

उपराज्यपाल ने स्वीकार किया कि इस साल फरवरी में, उन्होंने केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल आयुर्विज्ञान संस्थान तक पहुंच को आसान बनाने के लिए एक सड़क चौड़ीकरण परियोजना के स्थल का दौरा किया था। जब उन्हें बताया गया कि पेड़ों की कटाई के लिए 'सक्षम प्राधिकारी' से अनुमति का इंतजार है। एलजी ने कहा है कि उन्हें शीर्ष अदालत से अनुमति की आवश्यकता के बारे में पहली बार 21 मार्च को ही अवगत कराया गया था, जब डीडीए की ओर से विशेषज्ञ समिति के गठन के लिए प्रस्ताव प्राप्त हुआ था। पेड़ों को गिराने का वास्तविक कार्य 16 फरवरी के आसपास शुरू हो चुका था। उन्होंने कहा है कि शीर्ष न्यायालय के निर्देशों का उल्लंघन करने का उनका कोई इरादा नहीं था और जिस तरह से यह सब हुआ वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण था।

महत्वपूर्ण योजना के लिए हुई पेड़ों की कटाई

एलजी ने कहा है कि पेड़ों की कटाई एक महत्वपूर्ण परियोजना के लिए थी, जिसमें पहले ही 2200 करोड़ रुपये का सार्वजनिक धन निवेश किया जा चुका है। इसके अलावा उन्होंने स्पष्ट किया कि काटे गए पेड़ों की वास्तविक संख्या लगभग 642 पेड़ है न कि 1100, जैसा कि पहले अदालत को बताया गया था। एलजी ने शीर्ष अदालत से डीडीए के उपाध्यक्ष सुभाशिष पांडा को इस मामले में उनके खिलाफ शुरू की गई अवमानना मामले से मुक्त करने का भी आग्रह किया है। एलजी सक्सेना ने बताया कि जब पेड़ काटे गए, तब पांडा का मेडिकल ऑपरेशन चल रहा था और वे 12 मार्च तक शारीरिक रूप से कार्यालय में वापस नहीं आए।

बपसा प्रत्याशी ने दाखिल किया अपना नामांकन

» बोले- परिवारवाद की पार्टी है सपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मैनपुरी। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में करहल विधानसभा सीट पर उपचुनाव होना है। इसके लिए नामांकन जारी हैं। इसी कड़ी में बुधवार को बसपा प्रत्याशी डॉ अवनीश कुमार शाक्य ने अपना नामांकन दाखिल किया। उन्होंने एक सेट में अपना नामांकन दाखिल किया। बृहस्पतिवार को यह दो सेटों में और नामांकन दाखिल करेंगे।

बसपा प्रत्याशी डॉ अवनीश कुमार शाक्य के साथ प्रस्तावक के रूप में पूर्व एमएलसी नवरत्न सिंह बौद्ध, पूर्व एमएलसी नौशाद अली, पूर्व मंत्री गोरेलाल जाटव, मंडल कोऑर्डिनेटर दीपक पेंटर कलक्ट्रेट स्थित नामांकन कक्ष में पहुंचे। नामांकन के बाद डॉ अवनीश ने मीडिया से बातचीत की। बसपा प्रत्याशी ने सपा को आड़े हाथों लिया। कहा कि सपा परिवारवाद की पार्टी है। कहा कि %सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय% के नारे के साथ बसपा जीत दर्ज करेगी। सजातीय बंधुओं के साथ बसपा का वोटर जीत दिलाएगा। इस मौके पर पूर्व एमएलसी नौशाद ने कहा कि सपा के शासन में अराजकता रहती है। जनता उसे पसंद नहीं करती।

महाराष्ट्र की सीट शेयरिंग में अपने-अपने नफा नुकसान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हरियाणा और जम्मू कश्मीर के बाद दो राज्यों झारखंड और महाराष्ट्र में चुनाव हैं। इन दो राज्यों के साथ ही देश के अलग-अलग राज्यों की 47 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव भी हो रहे हैं लेकिन सबसे अधिक चर्चा महाराष्ट्र की हो रही है। महाराष्ट्र के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की अगुवाई वाले महायुति और कांग्रेस की अगुवाई वाले विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के बीच सत्ता वॉर माना जा रहा है।

इन दोनों ही राष्ट्रीय पार्टियों की अगुवाई वाले महायुति और एमवीए, दोनों ही गठबंधनों में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी हैं। दो राष्ट्रीय पार्टियों और दो-दो शिवसेना, एनसीपी के इन दो गठबंधनों में सीट शेयरिंग फॉर्मूले का आधिकारिक ऐलान नहीं हुआ है लेकिन सत्ताधारी गठबंधन ने उम्मीदवारों का ऐलान शुरू कर दिया है।

महायुति में शामिल पार्टियों ने अब तक 182 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर दिया है। वहीं, एमवीए में सीट शेयरिंग को लेकर मैराथन मंथन का दौर जारी है। सीट शेयरिंग का जो संभावित फॉर्मूला सामने आया है, उसके आधार पर अब बात इसे लेकर भी होने लगी है कि चुनाव मैदान में उतरने से पहले की इस फाइट में कौन सा दल फायदे में रहा और कौन सा घाटे में से समझने के लिए 2019 के महाराष्ट्र चुनाव की सीट शेयरिंग के साथ ही चुनाव नतीजों और शिवसेना-एनसीपी में बगावत के बाद बदली परिस्थितियों में दो से चार हुई पार्टियों की स्ट्रेंथ की चर्चा भी जरूरी है।

संभावित फॉर्मूले में किसको नफा, किसे नुकसान

महायुति में सीट बंटवारे का जो संभावित फॉर्मूला सामने आया है, उसके मुताबिक बीजेपी 156, एकनाथ शिंदे की शिवसेना 78 से 80 और अजित पवार की एनसीपी 53 से 54 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। शिंदे की पार्टी में 40 विधायक हैं और अजित पवार की पार्टी के भी 40, इस अनुपात में देखें तो शिवसेना फायदे और एनसीपी नुकसान में दिख रही है। दोनों ही दल राजनीतिक उठापटक के बाद खुद को असली पार्टी बताते आ रहे हैं। इस लिहाज से अगर देखें तो 2019 के मुकाबले दोनों की ही सीटें इस पर कम हुई हैं। अगर यह संभावित फॉर्मूला ही फाइनल रहता है तो बीजेपी 2019 के मुकाबले 10 कम सीटों पर चुनाव लड़ रही है। एमवीए में सीट शेयरिंग के संभावित फॉर्मूले की बात करें तो कांग्रेस 104 से 106, शिवसेना (यूबीटी) 92 से 96 और एनसीपी (एसपी) 85 से 88 सीटों पर चुनाव लड़ती नजर आ सकती हैं। अगर यही फॉर्मूला फाइनल सीट शेयरिंग में बदलता है तो 2019 के मुकाबले कम सीटों पर चुनाव लड़ने के बावजूद शिवसेना (यूबीटी) एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली पार्टी से ज्यादा सीटों पर लड़ती नजर आएगी। एनसीपी (एसपी) भी अजित पवार की पार्टी के मुकाबले सीटों की संख्या के लिहाज से फायदे में ही नजर आ रही है।

2019 में गठबंधनों का स्वरूप और सीट शेयरिंग

महाराष्ट्र विधानसभा में 288 सीटें हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में एक शिवसेना थी और एक एनसीपी। शिवसेना जहां बीजेपी के साथ गठबंधन कर चुनाव मैदान में उतरी थी तो वहीं एनसीपी का कांग्रेस से गठबंधन था। महायुति की बात करें तो बीजेपी ने 164 और शिवसेना ने 126 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे यानि दो सीटों पर इन दो दलों के बीच फ्रेंडली फाइट थी। वहीं, विपक्षी गठबंधन में कांग्रेस को 147 और एनसीपी को 121 सीटें मिली थीं। तब बीजेपी 105 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी और शिवसेना 56 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रही थी। एनसीपी को 54, कांग्रेस को 44 सीटें मिली थीं।

किस पार्टी की क्या है वर्तमान स्ट्रेंथ

महाराष्ट्र विधानसभा की वर्तमान तस्वीर की बात करें तो बीजेपी के 103, शिवसेना (शिंदे) के 40 और एनसीपी (अजित पवार) के 40 और बहुजन विकास अघाड़ी के तीन विधायक हैं। वहीं, महा विकास अघाड़ी की बात करें तो कांग्रेस के 43, शिवसेना (यूबीटी) के 15 और एनसीपी (शरद पवार) के 13 विधायक हैं। महाराष्ट्र विधानसभा में समाजवादी पार्टी के दो, एआईएमआईएम के दो, पीजेपी के दो, एमएनएस, सीपीएम, शेकाप, स्वाभिमानी पार्टी, राष्ट्रीय समाज पार्टी, महाराष्ट्र जनसुराज्य शक्ति पार्टी, क्रांतिकारी शेतकारी पार्टी के एक-एक विधायक हैं।

आखिर क्या है साउथ की जनसंख्या पॉलिटिक्स?

» 2029 लोकसभा चुनावों में उत्तरी राज्यों को 32 सीटों का फायदा होगा

» जबकि इस परिसीमन से दक्षिण के राज्यों को 24 सीटों का नुकसान होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अगर भारत में 2026 में निर्धारित परिसीमन किया जाता है, तो 2029 में होने वाले लोकसभा चुनावों में उत्तरी राज्यों को 32 सीटों का फायदा होगा, जबकि दक्षिणी राज्यों को 24 सीटों का नुकसान होगा। थिंक टैंक कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस द्वारा 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले प्रकाशित 'भारत के प्रतिनिधित्व का उभरता संकट' शीर्षक वाले अध्ययन में कहा गया था कि इस प्रक्रिया में तमिलनाडु और केरल राज्य मिलकर 16 सीटें खो देंगे।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने सोमवार को जनसांख्यिकीय परिवर्तन के मुद्दे को परिसीमन प्रक्रिया से जोड़ते हुए सुझाव दिया कि राज्य में लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने चाहिए। इससे दो दिन पहले आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने कहा था कि दक्षिणी राज्यों में लोगों को क्षेत्र की घटती आबादी से निपटने के लिए अधिक बच्चे पैदा करने चाहिए।

स्टालिन ने कहा- हमें 16 बच्चे पैदा करने चाहिए

स्टालिन ने चेन्नई में तमिलनाडु के हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग द्वारा आयोजित एक समारोह में यह टिप्पणी की, जहां वह 31 जोड़ों के शादी कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, अब एक ऐसा परिदृश्य है जहां संसद में हमारा प्रतिनिधित्व कम हो सकता है। इसने हमें यह सवाल करने पर मजबूर कर दिया है कि हमें छोटा परिवार क्यों रखना चाहिए? यह भी सोचने पर मजबूर कर दिया है कि हमें 16 बच्चे क्यों नहीं पैदा करने चाहिए। इसके बाद सीएम स्टालिन ने इस विषय पर विस्तार से बात किए बिना भाषण को समाप्त कर दिया। यह पहली बार नहीं है जब डीएमके नेता ने परिसीमन की प्रक्रिया पर चिंता जताई है। इस साल 14 फरवरी को, डीएमके के नेतृत्व वाली राज्य सरकार ने परिसीमन और 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के खिलाफ विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित किया था। प्रस्ताव पारित होने के बाद, स्टालिन ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा था कि यह तमिलनाडु के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था। क्योंकि इसने केंद्र में भाजपा सरकार के सत्तावादी एजेंडे के खिलाफ निर्णायक रुख अपनाया।

चंद्रबाबू नायडू ने भी लोगों से किया आग्रह

स्टालिन से पहले शनिवार को, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने दक्षिणी राज्यों में परिवारों से अधिक बच्चे पैदा करने का आग्रह किया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि क्षेत्र में प्रजनन दर राष्ट्रीय औसत 2.1 से नीचे गिरकर 1.6 हो गया है। उन्होंने यह भी कहा था कि राज्य सरकार जनसंख्या बढ़ाने के लिए बड़े परिवार रखने के लिए लोगों को प्रोत्साहन देने के लिए नया कानून लाने पर विचार कर रही है।

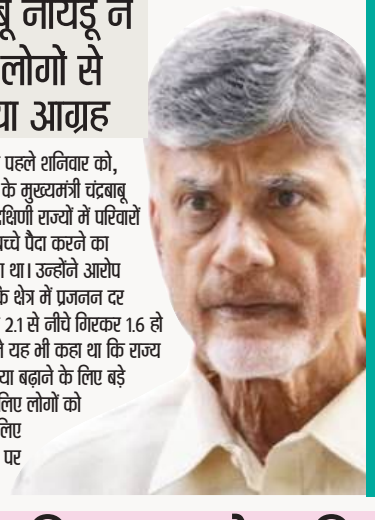

अच्छे काम के लिए दंड क्यों : जयराम रमेश

वहीं, वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश ने इस मामले में कहा कि दक्षिण भारतीय राज्य परिवार नियोजन में अग्रणी थे। प्रजनन क्षमता के रिप्लेसमेंट लेवल तक पहुंचने वाला केरल था। उसने 1988 में यह उपलब्धि हासिल की थी। उसके बाद 1993 में तमिलनाडु, 2001 में आंध्र प्रदेश और 2005 में कर्नाटक ने यह मुकाम हासिल किया। हालांकि, पिछले कुछ समय से यह चिंता व्यक्त की जा रही है कि इन सफलताओं से संसद में इन राज्यों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व कम हो सकता है। इसीलिए 2001 में वाजपेयी सरकार ने संविधान (अनुच्छेद 82) में संशोधन कर लोकसभा में पुनर्समायोजन को साल 2026 के बाद होने वाली पहली जनगणना के प्रकाशन पर निर्भर बना दिया। सोशल मीडिया पोस्ट में जयराम रमेश ने कहा, आम तौर पर, 2026 के बाद पहली जनगणना का मतलब 2031 की जनगणना होती, लेकिन पूरे दशक का जनगणना कार्यक्रम बाधित हो गया है और यहां तक कि 2021 के लिए निर्धारित जनगणना भी नहीं की गई है. अब हम सुनते रहते हैं कि लंबे समय से रुकी हुई जनगणना जल्द ही शुरू होगी. क्या इसका इस्तेमाल लोकसभा में सीटों के आवंटन के लिए किया जाएगा? इसमें कोई संदेह नहीं है कि सफलता को दंडित नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए किसी उपयुक्त फॉर्मूले पर काम किया जा सकता है। जाहिर है कि जयराम रमेश ने भी वहीं आशंका जाहिर की है जो स्टालिन और चंद्रबाबू नायडू भी जता रहे हैं।

तमिलनाडु ने पारित किए हैं दो प्रस्ताव

तमिलनाडु के सीएम स्टालिन ने कहा, हम दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में व्यवहार करने से इनकार करते हैं और हमने सर्वसम्मति से दो प्रस्ताव पारित किए हैं- पहला प्रस्ताव हमारे राज्य को अनुचित परिसीमन से बचाने के लिए था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमें हमारी सामाजिक-आर्थिक प्रगति और सफल जनसंख्या नियंत्रण उपायों के लिए दंडित नहीं किया जाए। दूसरा प्रस्ताव अलोकतांत्रिक (एक राष्ट्र एक चुनाव) कल्पना का मजबूती से विरोध करता है, जो हमारे विविध लोकतंत्र के ताने-बाने को खतरे में डालता है। इससे पहले, 2023 में, जब महिला आरक्षण विधेयक पारित किया गया था, तो स्टालिन ने केंद्र सरकार से दक्षिणी राज्यों में राजनीतिक दलों के डर को दूर करने की अपील की थी कि परिसीमन प्रक्रिया संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व कम कर देगी। इस प्रक्रिया को उन्होंने अपने सिर के ऊपर लटकती 'तलवार' बताया था।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

लुभावने ऑफर कर रहे जेब खाली

दीपावली के समीप आते ही बाजार ने लोगों की दहलीज पर जोरदार दस्तक दे दी है। दीपावली के मौके पर बाजार पूरी तरह से गुलजार हो चुके हैं। यूपी की राजधानी लखनऊ की अगर बात की जाए तो लखनऊ के सदर और अमीनाबाद बाजार में भारी संख्या में लोग पहुंचते हैं। दीपावली के मौके पर हर साल इस बाजार में जमकर भीड़ इकट्ठा होती है। बाजार में लक्ष्मी गणेश की मूर्ति के अलावा लोग रंगोली, सामग्री एवं पूजा पाठ का सामान भी खरीदते हुए नजर आ रहें हैं। आपको बता दें कि दीपावली से पहले लोग खरीदारी कर रहे हैं, ताकि त्यौहार के एक दिन पहले भीड़ में लोगों को न आना पड़े, वहीं शहर में पटाखा की थोक दुकानों पर फुटकर दुकानदारों की भीड़ जुटना शुरू हो गई है।

वहीं हालत ये है कि हालत यह है कि टीवी पर खबरें कम, विज्ञापन बेशुमार दिखाई देते हैं। अब तो दुकान पर जाकर लाइन में लगने के दिन भी लद गए हैं, सब कुछ ऑनलाइन खरीदी पर फ्री होम डिलीवरी की जद में आ चुका है, जिससे मोहल्ले की दुकानें वीरान और बहुराष्ट्रीय कंपनियां मालामाल हो रही हैं, तो वहीं कुछ लोग त्योहार के समय स्वदेशी का हांका जरूर लगाते हैं, मगर बाजार के मंजे हुए खिलाड़ी उनकी आवाज को सुनियोजित तरीके से दबा देते हैं। या फिर प्रबल प्रचार के बल पर अपने मिशन में कामयाब हो जाते हैं। इसे लेकर कुछ लोगों का मानना है कि जब से देश में नव-धनाढ्य वर्ग अस्तित्व में आ गया है, बाजार ने उनकी उमंगों को पंख देने का काम किया है। उधारी को क्रेडिट का नाम देकर नई पीढ़ी को कर्जदार बनाने के लिए नित नए जतन किए जा रहे हैं, जिससे गैर जरूरी वस्तुओं को खरीदने का एक फैशन बन गया है। ऊपरी चकाचौंध और दिखावे की ललक ने बाजार को पोषित करने का काम किया है। ऐसे में लुभावने ऑफर और जेब खाली करने वाली स्कीम मध्यम वर्ग के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। बिजली के भारी-भरकम बिल के बोझ तले दबे आदमी को इलेक्ट्रॉनिक सामान धड़ल्ले से डिस्काउंट पर दिया जा रहा है। जहां एक ओर बाज़ारवादी मानसिकता अपने चरमोत्कर्ष पर है। वहीं दूसरी ओर, समाज का स्याह पक्ष भी देखने को मिल रहा है। वहीं दूसरी तरफ देश का किसान मौसम की मार झेल रहा है, मगर बाजार के नुमाइंदे गांव-गांव जाकर मनोहारी सपने दिखा रहे हैं। छोटे-छोटे कारिंदे हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। आज लोग पुराने जूते लेकर मोची के पास नहीं जाते हैं, माल और बड़े शो रूम ने दर्जी की रफू और कारी की आमद रोक दी है। कुम्हार के मिट्टी के दीये लपजप करती चाइनीज सीरीज की भेंट चढ़ गए। या यूं कहें कि 'यूज एंड थ्रो' कल्चर के आगे सभी नतमस्तक हो चुके हैं।

"दीपावली के मौके पर हर साल इस बाजार में जमकर भीड़ इकट्ठा होती है। बाजार में लक्ष्मी गणेश की मूर्ति के अलावा लोग रंगोली, सामग्री एवं पूजा पाठ का सामान भी खरीदते हुए नजर आ रहें हैं। आपको बता दें कि दीपावली से पहले लोग खरीदारी कर रहे हैं, ताकि त्योहार के एक दिन पहले भीड़ में लोगों को न आना पड़े, वहीं शहर में पटाखा की थोक दुकानों पर फुटकर दुकानदारों की भीड़ जुटना शुरू हो गई है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

लोकतंत्र को राजनीति के 'पारिवारिक व्यवसाय' की चुनौती

विश्वनाथ सचदेव

इस बार स्वाधीनता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से दिये गये अपने भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजनीति में भाई-भतीजावाद के वर्चस्व को नकारने का आह्वान किया था। उन्होंने कहा था कि वह देश के एक लाख ऐसे युवाओं को राजनीति में सक्रिय करना चाहते हैं जिनका राजनीतिक परिवारों से कोई रिश्ता न हो। प्रधानमंत्री ने अपनी इस बात को अब फिर दुहराया है। अपने चुनाव-क्षेत्र बनारस में एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 'देश को परिवारवाद से बहुत बड़ा खतरा है। देश के युवाओं को सबसे ज़्यादा नुकसान इसी परिवारवाद से हुआ है।' प्रधानमंत्री की बात का कुल मिलाकर देश में अनुमोदन ही हुआ है।

यह पहली बार नहीं है जब देश की राजनीति में परिवारवाद के खतरों से परिचित कराने की कोशिश हुई है। सच तो यह है कि भारतीय जनता पार्टी अपनी राजनीति जिन आधारों पर चला रही है, उनमें कांग्रेस के परिवारवाद का स्थान काफी ऊंचा है। लेकिन सवाल जो उठ रहा है वह यही है कि राजनीति में परिवारवाद की इस आलोचना में ईमानदारी कितनी है?

जिस समाचार पत्र में मैंने बनारस के प्रधानमंत्री के भाषण वाला समाचार पढ़ा था, उसमें उसी पन्ने पर एक समाचार यह भी था कि महाराष्ट्र में विधानसभा के चुनाव में भाजपा के उम्मीदवारों की पहली सूची में ऐसे कई नाम हैं जिनका सीधा रिश्ता राजनीतिक परिवारों से है। समाचार में इस संदर्भ में कुछ नाम भी गिनाये गये थे। इन नामों में से एक पूर्व मुख्यमंत्री की बेटी और दूसरे पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे का नाम भी था। राज्यसभा के एक सदस्य के छोटे भाई को भी भाजपा ने टिकट दिया है। एक और पूर्व मुख्यमंत्री के पोते को भी भाजपा का टिकट मिला है। राज्य में भाजपा के अध्यक्ष के साथ-साथ उनके भाई को भी पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया है। यह सूची यहीं खत्म नहीं होती। सच तो यह है कि इस तरह की सूची भाजपा तक ही सीमित नहीं है। बाकी राजनीतिक दल भी राजनीति में भाई-भतीजावाद की बीमारी के शिकार हैं। उनकी सूचियां खंगाली जायेंगी तो वहां भी यही सब देखने को मिलेगा। भाजपाई उम्मीदवारों के ये कुछ नाम तो बस इसलिए गिनाये गये हैं कि भाई-भतीजावाद के संदर्भ में प्रधानमंत्री जो कहते हैं उनकी पार्टी का आचरण उसके बिल्कुल विपरीत दिख रहा है। और यह

बात भी कोई रहस्य नहीं है कि भाजपा में प्रधानमंत्री की बात ही अंतिम सच है। बजाय यह कहने के कि 'मैं यह चाहता हूं कि राजनीति में भाई-भतीजावाद का खात्मा हो', प्रधानमंत्री यह कहते हैं कि 'देखिए हमने चुनाव में किसी को इसलिए उम्मीदवार नहीं बनाया कि वे किसी राजनीतिक परिवार से जुड़ा है' तो उनकी बात का महत्व और असर कहीं अधिक बढ़ जाता।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाई-भतीजावाद की इस संस्कृति ने हमारी राजनीति को एक पारिवारिक व्यवसाय बनाकर रख दिया है। कांग्रेस पर इसे बढ़ावा देने का आरोप कोई भी ग़लत नहीं ठहरा सकता। कांग्रेस की राजनीति मोतीलाल नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक परिवारवाद से ग्रसित रही है। पर यह सच सिर्फ कांग्रेस पार्टी का नहीं है। हमारे देश की लगभग सभी पार्टियां इस बीमारी की शिकार हैं। हां, कम्युनिस्ट पार्टी वाले अवश्य इसका शिकार होने से बचे हुए दिखते हैं। बाकी सारे राजनीतिक दल, चाहे वे राष्ट्रीय स्तर के हों या फिर क्षेत्रीय दल हों, भाई-भतीजावाद के दलदल में डूबे दिखाई देते हैं।

जहां तक क्षेत्रीय दलों का सवाल है उनमें से कई तो हैं ही परिवारों की पार्टियां। बिहार में आर.जे.डी. को लालू-परिवार से, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी को यादव परिवार से, जम्मू-कश्मीर में अब्दुल्ला परिवार से और तमिलनाडु में द्रमुक को स्टालिन-परिवार से अलग करके कैसे देखा जा सकता है। यदि इसे 'पारिवारिक व्यवसाय' की संज्ञा दी जाती है तो क्या ग़लत है?

इस सच्चाई के बरक्स दूसरी सच्चाई है कांग्रेस पार्टी की जो भाजपा के निशाने पर है। स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने तो अपने पुत्र संजय को लेकर उठे सवालों के संदर्भ में स्पष्ट कहा कि यदि व्यवसायी की संतान व्यवसायी बन सकती है, वकील की संतान वकील तो राजनेता की संतान राजनीति में आकर क्या ग़लत करती है? कुछ ऐसा ही तर्क यह भी है कि राजनेता यदि अपने परिवार के सदस्यों को चुनाव का टिकट देकर आगे लाते हैं तो इसमें ग़लत क्या है? उन्हें चुनाव में जिताती तो जनता है। उन्हें हर कदम पर स्वयं को प्रमाणित करना होता है। इन दोनों प्रकार के तर्कों में कुछ सच्चाई हो सकती है, पर बड़ी सच्चाई यह है कि इस पारिवारिक राजनीति के पीछे जो ताकत है वह उसी राजशाही की है जिसे हटाकर हमने अपने को जनतांत्रिक देश घोषित किया है। इस जनतंत्र की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि यहां हर एक को आगे बढ़ने का अवसर और अधिकार मिलता है।

प्रतीकों का मोहताज नहीं न्याय

के.पी. सिंह

कुछ माह पहले सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड़ ने उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के पुस्तकालय में न्याय-देवी की नई प्रतिमा का अनावरण किया था। ऐसा विचार है कि न्यायाधीशों की गैलरी की दीवार पर उकेरे गए एक भित्ति चित्र ने सीजेआई को भारतीय न्याय प्रणाली की विकसित प्रकृति का दस्तावेजीकरण करने के लिए न्याय प्रतिमा का भारतीयकरण करने का विचार दिया होगा। भित्ति चित्र में न्याय-देवी को एक भारतीय देवी के परिधान में चित्रित किया गया है, जिसकी आंखें खुली हैं और आंखों पर पट्टी भी नहीं है, पारम्परिक तलवार के स्थान पर देवी के हाथ में एक किताब (परिकल्पना है कि यह भारत का संविधान है) दिखाई देती है, जो इस बात का प्रतीक है कि नए भारत में न्याय अंधा नहीं है, और न ही केवल सजा देना न्याय प्रणाली का एकमात्र उद्देश्य है।

लम्बे समय से न्यायपालिका और कानूनी संस्थानों से जुड़ी न्याय-देवी की प्रतिमा के डिजाइन में संशोधन को कुछ कानूनी जानकार और मीडिया के लोग भारत की न्याय प्रणाली को उपनिवेशवाद की छाया से बाहर निकालने की कवायद के रूप में भी देख रहे हैं, यद्यपि ऐसा प्रतीत नहीं होता है।

न्याय-देवी की अवधारणा, चाहे वह पेंटिंग, मूर्ति अथवा धातु की मूर्ति के रूप में हो, दुनिया के लिए नई नहीं है। यह प्राचीन यूनान और मिस्र की सभ्यताओं से जुड़े मिथकों में हजारों वर्ष पहले से मौजूद रही है। ग्रीक देवी थेमिस, कानून, व्यवस्था और न्याय का प्रतीक मानी जाती है। मिस्र के लोग 'मात' को न्याय का प्रतिरूप मानते रहे हैं जिसके हाथ में तलवार और सत्य के पंख होते हैं। न्याय की देवी का सबसे सीधा और सरल प्रतिरूपण रोमन सभ्यता में देवी जस्टिसिया को माना गया है, जिसकी छवि आधुनिक समय में बनाई गई न्याय-देवी की प्रतिमा से मेल खाती है। देवी जस्टिसिया नैतिकता और न्याय निरूपण करने वाली मानी जाती रही है।

न्याय-देवी की प्रतिमा का कोई सार्वभौमिक डिजाइन नहीं है और इसका स्वरूप अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न अंगीकृत किया गया है। कुछ स्थानों पर न्याय-देवी को सर्प को कुचलते हुए चित्रित किया गया है जो यह प्रदर्शित करता है कि दुराचारियों और भ्रष्टाचार पर अन्ततः न्याय की ही जीत होती है। वहीं दूसरी ओर कुछ प्रतिमाओं में सर्प गायब है। भारतीय न्याय-देवी की नई प्रतिमा में भी सर्प दिखाई नहीं देता है। न्याय की प्रतिमा के सभी रूपों में तराजू दृष्टिगोचर होती है जो न्याय में निष्पक्षता और न्यायाधीशों द्वारा उनके समक्ष प्रस्तुत सभी साक्ष्यों को परखने के उनके दायित्व का बोध कराती है। न्याय-देवी की प्राचीन प्रतिमाओं में उसकी आंखों पर काली पट्टी नहीं होती थी, आंखों पर काली पट्टी का प्रचलन पहली बार सोलहवीं शताब्दी में शुरू हुआ था। जाहिर तौर पर उस समय काली पट्टी इस बात की प्रतीक थी कि न्याय प्रणाली में कई निर्दोष लोग भी कानून की अज्ञानता और पेचीदगियों के कारण भुक्तभोगी होते हैं। कालान्तर में काली पट्टी को कानून की निष्पक्षता और कानून के समक्ष सब की बराबरी के रूप में देखा जाने लगा। काली पट्टी इस बात के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गई कि न्याय के सामने राजनीति, धन-दौलत और शोहरत मायने नहीं रखती। उच्चतम न्यायालय ने गोधरा दंगों की पीड़िता जाहिरा शेख के मामले में वर्ष 2004 में न्याय-देवी की आंखों पर बंधी काली पट्टी की व्याख्या की थी जब जाहिरा तीन बार अदालत के सामने अपने दिये गये बयानों से मुकर गई थी। अदालत ने कहा था कि काली पट्टी केवल एक झीना पर्दा है जिसे उठाकर अदालतों को यह देखना चाहिए कि उनके समक्ष उपस्थित व्यक्ति कौन है और वह कैसे व्यवहार कर रहा है। इस प्रकार भारतीय उच्च न्यायालय ने काली पट्टी को एक पारदर्शी पर्दे की संज्ञा देकर यह साबित किया था कि कानून अंधा नहीं हो सकता और उसमें परिस्थितियों को देखने की क्षमता है।

न्याय-देवी की नई प्रतिमा की आंखों से हटाई गई पट्टी को न्याय-विशेषज्ञों द्वारा एक नए युग की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें न्याय वादियों की हैसियत और धन-दौलत से प्रभावित नहीं होगा। प्रधान न्यायाधीश चन्द्रचूड़ ने भी आंखों पर पट्टी को हटाने को यह कहते हुए उचित ठहराया है कि कानून अंधा नहीं होता है, वह सभी को समान रूप से देखता है। दूसरी ओर, विभिन्न बुद्धिजीवियों और दार्शनिकों का मानना है कि न्याय-देवी की आंखों से पट्टी को हटा देने और हाथ में तलवार के स्थान पर संविधान की प्रति धारण करवा देने को न्याय की अवधारणा का भारतीयकरण नहीं माना जा सकता, जैसा कि कुछ अति-उत्साही समूहों द्वारा प्रचारित किया जा रहा है। उनका मानना है कि वैदिक तथा पौराणिक मिथकों में शनि देव और यमराज को न्याय के देवता के रूप में प्रतिबिम्बित किया जाता रहा है, शनि देव जीवित व्यक्तियों और यमराज मृतकों के साथ न्याय करते हैं।

यदि न्याय-देवी का भारतीयकरण करना ही था तो इन देवताओं में से किसी को भी न्याय का प्रतीक मान लेना ज्यादा उचित होता। आलोचकों का यह भी तर्क है कि न्याय-देवी के हाथ में तलवार के स्थान पर संविधान की प्रति को थमाना भी युक्तिसंगत नहीं है। परम्परागत रूप से प्रत्येक भारतीय देवी-देवता के शरीर पर कोई न कोई अस्त्र-शस्त्र विभूषित होता है जो यह संदेश देता है कि उनमें दुष्टों के दमन करने की शक्ति भी निहित है। तलवार अदालत के फैसलों को हर हालत में लागू करवाने और बुराइयों के नष्ट करने का प्रतीक है, जबकि संविधान की किताब कानून के महत्व को दर्शाती है। वस्तुतः न्याय अधूरा है जब तक उसे लागू करने के लिए न्याय प्रणाली के हाथ में दमनकारी शक्तियां न हो। कानून और न्याय दो अलग-अलग अवधारणाएं हैं। ऑल इंडिया जजिज प्रकरण (1992) में जस्टिस कृष्णा अय्यर ने कहा था कि कानून लक्ष्य को प्राप्त करने का एक जरिया होता है और न्याय ही वह लक्ष्य है। इसलिए शस्त्र के बिना न्याय-देवी की प्रतिमा अधूरी ही है क्योंकि इसमें न्यायालय के फैसले को लागू करने वाले दमनकारी अस्त्र-शस्त्र का समावेश नहीं है। वह न्याय अधूरा ही रहेगा जिसे लागू न किया सके।

घर पर रहें सक्रिय

घर के छोटे-छोटे काम जैसे सफाई, झाड़ू लगाना, पोछा लगाना, बर्तन धोना आदि करते समय शरीर की अच्छी एक्सरसाइज हो सकती है। ये गतिविधियां आपको सक्रिय रखती हैं और कैलोरी बर्न करने में मदद करती हैं। वजन बढ़ने से रोकने के लिए ये अच्छा तरीका है। इसके लिए अपने दिन की शुरुआत एक सक्रिय सुबह की दिनचर्या के साथ अच्छे से करें। दौड़ने या वजन उठाने जैसी सुबह की दिनचर्या से आपको जो अतिरिक्त ऊर्जा मिलती है, वह आपके पूरे दिन में काम आएगी, जिससे आपकी उत्पादकता बढ़ेगी। जंपिंग जैक भी आपके वजन को नियंत्रित करने और आपके हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का एक शानदार तरीका है। यदि परिस्थितियां अनुमति दें, तो सुबह के व्यायाम के लिए बाहर जाना, अपने वातावरण को बदलने और दिन की शुरुआत करने से पहले कुछ ताजी हवा लेने का एक अच्छा तरीका हो सकता है।

सीढ़ियों का उपयोग

लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करने से वजन नियंत्रित रहता है। जो लोग वजन कम करना चाहते हैं उनके लिए सीढ़ियां चढ़ना एक बेहतरीन कार्डियो एक्सरसाइज है, जो जिम के बिना ही आपको फिट रखने में मदद करती है। क्योंकि जब आप लिफ्ट या लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों का उपयोग करते हैं, तो परिसंचरण तंत्र में ऑक्सीजन और ऊर्जा की मांग बढ़ जाती है। इस मांग को पूरा करने के लिए, आपकी हृदय गति बढ़ जाती है। हृदय अधिक तेज़ी से रक्त पंप करता है, जो काम करने वाली मांसपेशियों को ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचाता है।

ग्रीन टी और हर्बल चाय

खानपान पर ध्यान देकर भी वजन कम कर सकते हैं। वजन घटाने के लिए डाइटिंग की जरूरत नहीं। बल्कि जो भी खाएं उसे सही तरह से पचा लें। ग्रीन टी और हर्बल चाय के सेवन से मेटाबॉलिज्म तेज होता है और वजन घटाने में मदद मिलती है। ये पेय पदार्थ एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होते हैं। कई तरह की स्टडी में भी यह बात कही गई है कि ग्रीन टी के सेवन से वजन को कंट्रोल किया जा सकता है। इसमें मौजूद कैफीन और कैटेचिन्स नामक तत्व मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करते हैं, जिससे फैट बर्न करने में मदद मिलती है। ग्रीन टी के अर्क से वजन कम होने के साथ ही बॉडी मास इंडेक्स भी कम होता है। इसके अलावा ग्रीन टी के सेवन से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या नहीं होती है। यह हर्बल टी ब्लड प्रेशर को कम कर सकती है।

घर पर बिना डाइटिंग ऐसे घटाएं वजन

आज की व्यस्त जीवनशैली में वजन घटाना कई लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। वजन कम करने के लिए लोग जिम जाते हैं। जिम में कठिन एक्सरसाइज के जरिए खूब पसीना बहाते हैं। इसके अलावा डाइटिंग करके भी चर्बी को कम करने का प्रयास करते हैं। हालांकि सामान्य लोगों के लिए ये दोनों ही तरीके अपनाना मुश्किल हो सकता है। जिम में ट्रेनर की निगरानी में ही चर्बी पिघलाने की कोशिश करनी चाहिए, वरना इसका नकारात्मक असर शरीर पर हो सकता है। वहीं डाइटिंग के नाम पर लोग खाना पीना छोड़ देते हैं, वह भी शरीर के लिए नुकसानदायक हो सकता है। अगर आप घर पर ही रहकर आसानी से वजन घटाना चाहते हैं तो व्यायाम करके वजन कम किया जा सकता है। वहीं संतुलित और पौष्टिक आहार का सेवन भी वजन कम करने में असरदार हो सकता है।

छोटी-छोटी एक्सरसाइज

वजन कम करने वाली एक्सरसाइज स्क्वाट्स, पुश-अप्स जैसी एक्सरसाइज वजन कम करने में सहायक हो सकती है। ये बिना किसी उपकरण के की जाने वाली एक्सरसाइज हैं जो शरीर को टोन करने में काफी प्रभावी हैं।

योग और स्ट्रेचिंग

योग न केवल मानसिक शांति प्रदान करता है, बल्कि वजन घटाने में भी मदद करता है। नियमित योग से शरीर की फ्लेक्सिबिलिटी बढ़ती है और मेटाबॉलिज्म तेज होता है। सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, भुजंगासन जैसे योगासन वजन घटाने में कारगर साबित होते हैं। इसके अलावा हर दिन कुछ मिनटों के लिए स्ट्रेचिंग करें। इससे शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है और मांसपेशियों को मजबूती मिलती है, जो वजन घटाने में मददगार होता है। स्ट्रेचिंग का एक अन्य लाभ यह है कि यह आपकी गति और फ्लेक्सिबिलिटी में सुधार कर सकता है, जो आपकी समग्र फिटनेस और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं। बेहतर फ्लेक्सिबिलिटी आपको रोजमर्रा की गतिविधियों को आसानी से करने में मदद कर सकता है, साथ ही चोटों को रोक सकता है और आपकी मुद्रा में सुधार कर सकता है।

पैदल चलने की आदत

घर पर ही आप छोटी छोटी एक्सरसाइज से वजन कम कर सकते हैं। जैसे कि आप नियमित रुप से पैदल चलें और तेज जॉगिंग करना या हल्का तेजी से दौड़ना, जल्दी वजन कम करने में सहायक है। इसके अलावा दिन में 30 मिनट की ब्रिस्क वॉक यानी तेज चाल से चलने की आदत डालें। यह आपके मेटाबॉलिज्म को तेज करता है और कैलोरी बर्न करता है। जिससे वजन कम करने में सहायता मिलती है।

हंसना मना है

एक इंजीनियरिंग कॉलेज के सभी शिक्षकों को एक टूर पर ले जाने के लिए एक हवाई जहाज में बैठाया गया! शिक्षक बैठ गए तो पायलट ने घोषणा की-आप सभी शिक्षकों को यह जान कर खुशी होगी कि यह प्लेन आप ही के कॉलेज के होनहार विद्यार्थियों ने बनाया है! इतना सुनते ही शिक्षक इस डर से नीचे उतर गए कि कहीं उड़ान भरते ही विमान दुर्घटना ग्रस्त ना हो जाए! लेकिन प्रिंसिपल साहब बैठे रहे! यह देख पायलट बोला-सर, सभी टीचर अपने विद्यार्थियों का नाम सुनते ही डर कर उतर गए लेकिन क्या आपको डर नहीं लग रहा है? प्रिंसिपल ने जवाब दिया मुझे अपने कॉलेज के शिक्षकों से भी ज्यादा अपने विद्यार्थी पर भरोसा है। देखना यह प्लेन स्टार्ट ही नहीं होगा?

लड़का: कहां जा रही हो? लड़की: आत्महत्या करने? लड़का: तो इतना मेकअप क्यों किया हुआ है? लड़की : अबे गधे ! कल न्यूज पेपर में फोटो आएगी न?

एक ताऊ मरने वाला था घर वालो ने कहा: अब तो भगवान का नाम ले लो, ताऊ बोला: अब क्या नाम लेना, 10-15 मिनिट बाद तो आमना-सामना हो ही जाएगा?

कहानी | एक सत्संग ऐसा भी

एक सेठ और सेठानी रोज सत्संग में जाते थे। उनके घर एक पिंजरे में तोता पाला हुआ था। तोता ने पूछा सेठजी आप रोज कहां जाते है। सेठजी बोले कि सत्संग में ज्ञान सुनने जाते है। तोता बोला संत महात्मा से पूछना कि मैं आजाद कब होऊंगा। सेठजी सत्संग खत्म होने के बाद संत से पूछा कि महाराज हमारे घर जो तोता है उसने पूछा है कि वो आजाद कब होगा? संत जी ऐसा सुनते हीं बेहोश हो गये। सेठजी संत की हालत देख कर चुप-चाप वहां से निकल जाते है। घर आते ही तोता सेठजी से पूछता है कि संत ने क्या कहा। सेठजी कहते है कि तेरे किस्मत ही खराब है जो तेरी आजादी का पूछते ही वो बेहोश हो गए। तोता बोला कोई बात नहीं सेठजी में सब समझ गया। दूसरे दिन सेठजी सत्संग में जाने लगे तब तोता जानबूझ कर बेहोश होकर गिर जाता हैं। सेठजी मरा मानकर जैसे ही पिंजरे से बाहर निकालते है, तो वो उड़ जाता है। सत्संग जाते ही संत सेठजी को पूछते है कि कल आप उस तोते के बारे में पूछ रहे थे ना अब वो कहां हैं। सेठजी बोले आज वो जानबुझ कर बेहोश हो गया, मैंने जैसे ही बाहर निकाला तो वो उड़ गया। तब संत ने सेठजी से कहा की देखो तुम इतने समय से सत्संग सुनकर भी आज तक सांसारिक मोह-माया के पिंजरे में फंसे हुए हो और उस तोते को देखो बिना सत्संग में आये मेरा एक इशारा समझ कर आजाद हो गया।

शिक्षा- इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम सत्संग में तो जाते हैं ज्ञान की बाते करते हैं या सुनते भी हैं, पर हमारा मन हमेशा सांसारिक बातों में ही उलझा रहता हैं। सत्संग में भी हम सिर्फ उन बातों को पसंद करते है जिसमें हमारा स्वार्थ सिद्ध होता हैं। जबकि सत्संग जाकर हमें सत्य को स्वीकार कर सभी बातों को महत्व देना चाहिये और जिस असत्य, झूठ और अहंकार को हम धारण किये हुए हैं उसे साहस के साथ मन से उतार कर सत्य को स्वीकार करना चाहिए।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

रोजगार में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। निवेश लाभदायक रहेगा।

वृषभ

व्ययवृद्धि से तनाव रहेगा। किसी व्यक्ति के उकसावे में न आएं। विवाद से बचें। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा। व्यापार ठीक चलेगा।

मिथुन

बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। लंबी यात्रा हो सकती है। लाभ होगा। नए अनुबंध हो सकते हैं। रोजगार में वृद्धि होगी। रुके कार्य पूर्ण होंगे। प्रसन्नता रहेगी।

कर्क

आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। कोई बड़ा कार्य कर पाएंगे। व्यवसाय मनोनुकूल लाभ देगा। कार्य पूर्ण होंगे। प्रसन्नता रहेगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

सिंह

तीर्थदर्शन हो सकता है। सत्संग का लाभ मिलेगा। राजकीय सहयोग से कार्य पूर्ण व लाभदायक रहेंगे। कारोबार मनोनुकूल रहेगा। शेयर मार्केट में जोखिम न लें।

कन्या

वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग से हानि की आशंका है, सावधानी रखें। दूसरों के झगड़ों में हस्तक्षेप न करें। आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से क्षोभ होगा।

तुला

शत्रुओं का पराभव होगा। राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। वैवाहिक प्रस्ताव प्राप्त हो सकता है। कारोबार से लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

वृश्चिक

संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। प्रॉपर्टी ब्रोकर्स के लिए सुनहरा मौका साबित हो सकता है। भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। रोजगार में वृद्धि के योग हैं।

धनु

मेहनत का फल पूरा नहीं मिलेगा। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। किसी प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन मिल सकता है।

मकर

लेन-देन में सावधानी रखें। किसी भी अपरिचित व्यक्ति पर अंधविश्वास न करें। शोक संदेश मिल सकता है। विवाद को बढ़ावा न दें। किसी के उकसाने में न आएं।

कुम्भ

मेहनत सफल रहेगी। बिगड़े काम बनेंगे। कार्यसिद्धि से प्रसन्नता रहेगी। आय में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने के अवसर मिलेंगे। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी।

मीन

पुराने संगी-साथी व रिश्तेदारों से मुलाकात होगी। नए मित्र बनेंगे। अच्छी खबर मिलेगी। प्रसन्नता रहेगी। कार्यों में गति आएगी। विवेक का प्रयोग करें।

बॉलीवुड | मन की बात

जिगरा को सावी की कॉपी बताने पर वासन बाला बोले- खुद देखें और मन बनाएं

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट और वेदांत रैना की फिल्म जिगरा 11 अक्तूबर को सिनेमाघर में रिलीज हुई थी। फिल्म का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन कुछ खास नहीं रहा लेकिन आलिया की यह फिल्म विवादों में लगातार घिरी हुई है। कुछ वक्त पहले एक्ट्रेस दिव्या खोसला कुमार ने जिगरा के निर्माताओं पर फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन में हेराफेरी करने और उनकी फिल्म सावी को कॉपी करने का आरोप लगाया था। एक्ट्रेस के आरोपों पर अब जिगरा के निर्देशक वासन बाला ने अपनी चुप्पी तोड़ी है। उनका कहना है कि दोनों फिल्मों को देखने के बाद ही कोई फैसला लेना ठीक होगा। बाला ने विवादों में घिरी अपनी फिल्म जिगरा पर बात की। उन्होंने कहा, दोनों ही फिल्में अब रिलीज हो गई हैं और सार्वजनिक डोमेन में पहुंच गई हैं। कृपया आप फिल्मों को देखें और अपना मन बनाएं। बोलने की आजादी है, इसलिए सभी को बोलने का पूरा अधिकार है कि उन्हें क्या कहना है। दोनों फिल्मों को देखने से किसी को रोका नहीं जा सकता है। जाहिर है कि आलिया भट्ट की फिल्म जिगरा का बॉक्स ऑफिस पर काफी खराब प्रदर्शन रहा है। इसका पूरा दोष खुद पर लेते हुए वासन बाला ने कहा, बॉक्स ऑफिस ने हमें गिराया है। एक निर्देशक के नाते अगर क्रिएटिविटी के हर विभाग को लेकर मुझ पर 100 फीसदी भरोसा है तो फिर बॉक्स ऑफिस पर भरोसा करना ही होगा। हालांकि यह स्पष्ट रूप से मेरे मोर्चे पर निराशा की तरह है। फिल्म जिगरा पर सावी की कॉपी का आरोप लगने पर वासन बाला ने अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, जिस वक्त मैं जिगरा की कहानी लिख रहा था, तब सावी बाहर आई थी। जाहिर है कि फिल्म जिगरा पर सिर्फ साहित्यिक चोरी का आरोप नहीं लगा है बल्कि फिल्म की कास्टिंग टीम को मणिपुर के अभिनेता बिजौ थांगजाम ने गैर-पेशेवर व्यवहार बताते हुए फटकार लगाई थी। साथ ही पूर्वोत्तर भारत के अभिनेताओं के प्रति भेदभाव के लिए फिल्म की आलोचना की गई थी। गौरतलब है कि दिव्या खोसला कुमार की फिल्म सावी इस साल 31 मई को रिलीज हुई थी, जिसमें हर्षवर्धन राणे और अनिल कपूर भी अहम किरदार में हैं।

मुझे ससुराल वाले किट्टो कहकर बुलाते हैं: कैटरीना

कटरीना कैफ और विक्की कौशल की करवाचौथ की तस्वीरों को प्रशंसक बहुत पसंद कर रहे हैं। कैटरीना को अक्सर त्योहार पर परिवार के साथ ही देखा जाता है। त्योहार पर पूरा परिवार एक साथ रहता है। कैटरीना ने हाल ही में अपने घर का नाम बताया जो उनके ससुराल वाले प्यार से कहकर बुलाते हैं। द कपिल शर्मा शो सीजन 2 में कैटरीना कैफ से पूछा कि उनके ससुराल वालों ने उन्हें क्या नाम दिया है, इस पर कैटरीना ने कहा कि ससुराल वाले उन्हें किट्टो कहकर बुलाते हैं। इस शो में कैटरीना के साथ अभिनेता ईशान खट्टर और सिद्धांत चतुर्वेदी भी पहुंचे थे। कुछ दिन पहले ही कैटरीना ने ससुराल वालों के साथ करवा चौथ की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा की हैं। इन तस्वीरों को प्रशंसकों ने पसंद किया है। अभिनेत्री कैटरीना कैफ ने भी अपने पति विक्की कौशल के लिए करवा चौथ का व्रत रखा। इस दौरान उन्होंने पूरे कौशल परिवार के साथ एक प्यारी तस्वीर भी साझा की है। विक्की कौशल और अभिनेत्री कैटरीना कैफ ने 09 दिसंबर 2021 को शादी की थी। विक्की कौशल भी कैटरीना के लिए करवा चौथ का व्रत रखते हैं। इस बात को खुद कैटरीना कैफ एक बताया था कि मेरी लंबी उम्र और अच्छी सेहत के लिए विक्की कौशल करवा चौथ का व्रत करते हैं जबकि मैंने उनसे कभी नहीं कहा कि वह इस व्रत को करें। खुद अभिनेत्री कैटरीना कैफ शादी के बाद से करवा चौथ का व्रत कर रही हैं।

कटरीना कैफ और विक्की कौशल की करवाचौथ की तस्वीरों को प्रशंसक बहुत पसंद कर रहे हैं।

मुझे रावण का किरदार लगता है आकर्षक: यश

निर्देश तिवारी की रामायण एक बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित फिल्म है, जिसे लेकर लगातार खबरें सामने आती रहती हैं। वहीं कन्नड़ फिल्मों के सुपरस्टार यश के इस फिल्म में रावण की भूमिका निभाने की खबरें लंबे अरसे से सामने आ रही हैं, लेकिन यश ने कभी अपने किरदार की पुष्टि नहीं की थी। हालांकि, अब आखिरकार उन्होंने पुष्टि की है कि वो फिल्म में रावण का किरदार निभाने वाले हैं। अभिनेता ने कहा कि वह इस कहानी में रावण के अलावा कोई और किरदार नहीं निभाएंगे। अभिनेता ने आगे कहा कि वह डीएनईजी और प्राइम फोकस के नमित मल्होत्रा से बात कर रहे थे, जब पहली बार उन्हें रामायण के बारे में जानकारी मिली। कन्नड़ सुपरस्टार ने कहा कि वो नमित के जुनून और इसे लेकर उनकी सोच से प्रभावित हुए थे। अभिनेता के मुताबिक, नमित ने उनसे पूछा कि क्या वह रावण की भूमिका के लिए फिल्म का हिस्सा बनना चाहेंगे? इस पर अभिनेता ने उन्हें जवाब दिया था कि अगर किरदार को किरदार की तरह ही दिखाया जाए, अगर ऐसा नहीं होता है, तो यह फिल्म नहीं बनेगी। यश ने आगे बताते हुए कहा, इस तरह के बजट वाली फिल्म बनाने के लिए, आपको ऐसे अभिनेताओं की जरूरत होती है, जो एक साथ आकर प्रोजेक्ट पर काम करें। यह आपके और आपके स्टारडम से परे होना चाहिए। अभिनेता ने कहा कि इस पर बातचीत आगे बढ़ी और उन्होंने फिल्म का सह-निर्माण करने का भी फैसला किया। यश ने रावण के किरदार को लेकर कहा, यह एक बहुत ही आकर्षक किरदार है। मैं इसे किसी और कारण से नहीं करता। रामायण में, अगर आपने मुझसे पूछा होता, 'क्या आप कोई और किरदार निभाएंगे?' तो मैं कहता शायद नहीं। अभिनेता ने आगे बताया कि उनके लिए रावण एक अभिनेता के रूप में निभाने के लिए सबसे रोमांचक किरदार है। इसकी वजह है कि उन्हें इस किरदार के अलग-अलग रंग और बारीकियां पसंद हैं। अभिनेता ने कहा कि इसे बहुत अलग तरीके से पेश करने की बहुत गुंजाइश है। एक अभिनेता के रूप में वो इस फिल्म को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अभिनेता ने उम्मीद जताते हुए कहा कि उन्हें लगता है कि ये फिल्म काफी अनूठी होगी।

मुझे इस किरदार के अलग-अलग रंग और बारीकियां पसंद हैं

चमत्कारी है देवी की 1000 से ज्यादा मूर्तियों वाला मंदिर, अलग है सभी की डिजाइन

दुनिया में चमत्कारी मंदिर केवल भारत में ही नहीं हैं। जापान के क्योटो का एक मंदिर अपने चमत्कारी इलाज के साथ साथ अनूठी एक हजार से भी ज्यादा सुंदर मूर्तियों के लिए जाना जाता है। संजूसांगेन-डो मंदिर को 1164 में बनाया गया था जिसकी हर मूर्ति दया की देवी कन्नन की है। मंदिर के नाम का मतलब स्तंभों के बीच 33 रिक्त स्थान वाला हॉल है, जो इसकी अनूठी संरचना को दर्शाता है। लोग अक्सर मूर्तियों की विशाल संख्या को देखकर चकित हो जाते हैं। जापान के क्योटो में स्थित संजूसांगेन-डो एक बौद्ध मंदिर है जो मूर्तियों के अपने प्रभावशाली संग्रह के लिए जाना जाता है। संजूसांगेन-डो नाम इमारत के वास्तुशिल्प डिजाइन को दर्शाता है, जिसके स्तंभों के बीच 33 अंतराल हैं। जिनमें मूर्तियां दस पंक्तियों और पचास स्तंभों में व्यवस्थित हैं। इसे 1164 में सम्राट गो-शिराकावा के आदेश पर किया गया था। आग लगने से मूल इमारत नष्ट हो जाने के बाद इसे 1266 में फिर से बनाया गया था। 120 मीटर लंबा, संजुसांगेन-डो जापान में सबसे लंबी लकड़ी की संरचना है। संजुसांगेन-डो में रखी गई मूर्तियां न केवल असंख्य हैं, बल्कि वे जटिल रूप से डिजाइन की गई हैं और उनका गहरा धार्मिक महत्व भी है। मंदिर की केंद्रीय मूर्ति एक बड़ी, बैठी हुई हज़ार-सशस्त्र कन्नन है, जिसके दोनों ओर 500 खड़ी कन्नन मूर्तियां हैं। यह केंद्रीय आकृति जापानी बौद्ध कला की एक उत्कृष्ट कृति है। मूर्तियां जापानी साइप्रस की लकड़ी से बनाई गई हैं, जो अपनी स्थायित्व और महीन दाने के लिए जानी जाती है। सामग्री के इस विकल्प ने सदियों से मूर्तियों को संरक्षित करने में मदद की है। कई मूर्तियां सोने की पत्ती से ढकी हुई हैं, जो उन्हें एक चमकदार रूप देती हैं। मूर्तियों की बड़ी संख्या के बावजूद, हर एक में अद्वितीय चेहरे की विशेषताएं और भाव हैं। मंदिर की एक और खासियत है जो इसे जापान ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर बनाती है। तोशिया नामक वार्षिक तीरंदाजी प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। यह आयोजन एदो काल से चला आ रहा है और पूरे जापान से तीरंदाजों को आकर्षित करता है। कई लोगों का मानना है कि मंदिर में उपचार शक्तियां हैं। लोग अक्सर स्वास्थ्य और बीमारियों से ठीक होने के लिए प्रार्थना करने आते हैं। इसके अलावा इसके बारे में कहा जाता है कि सदियों पुराना होने के बावजूद, संजुसांगेन-डो भूकंप और आग सहित कई प्राकृतिक आपदाओं से बच गया है। यह इसके रहस्य और आकर्षण को बढ़ाता है।

अजब-गजब | भारत का रहस्यमयी समुद्र

कुछ घंटों के लिए गायब हो जाता है पानी

भारत में कई ऐसे विचित्र स्थान मौजूद हैं, जिनका रहस्य सुलझा पाना थोड़ा मुश्किल है। ऐसे ही रहस्यों में से एक है ओडिशा का चांदीपुर बीच। यह रहस्यमयी बीच चांदीपुर के छोटे से शहर में बालासोर गांव के पास है। यह अद्वितीय है क्योंकि यहां समुद्र का पानी समय-समय पर आंखों के सामने से गायब हो जाता है और फिर कुछ समय बाद दिखाई देने लगता है। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह एकांत समुद्र तट है। जहां समंदर कुछ घंटों के लिए गायब हो जाता है और फिर वापिस लौट आता है। इस बीच का नाम चांदीपुर है। इस बीच पर पहुंचने के लिए बालेश्वर या बालासोर स्टेशन पर उतरना होता है, जहां से चांदीपुर 30 किलोमीटर दूर है। बालासोर ओडिशा का एक छोटा सा शांत कस्बा है और चांदीपुर बीच इसी कस्बे में स्थित है। हाइड एंड सीक के बीच के नाम से पॉपुलर इस बीच की गायब होने और वापस दिखाई देने की वजह से इसे लुका छिपी बीच या हाइड एंड सीक बीच भी कहा जाता है। इस चांदीपुर बीच में कैसुरीना पेड़ों, प्राचीन पानी और रसीला तटीय वनस्पति है। यहां समुद्र का पानी कम-ज्वार के दौरान 5 किलोमीटर तक दिन में दो बार, केवल गोले को पीछे छोड़ देता है। उच्च ज्वार के दौरान पानी लौटता है। इस तरह समुद्र लुका छिपी खेलता हुआ दिखाई देता है। इस प्राकृतिक घटना की वजह से यह बीच काफी पॉपुलर है। जब समुद्र का पानी फिर से प्रकट होता है, तो यह अपने साथ केकड़े और लाल केकड़े लाता है। हालांकि समुद्र के पानी के गायब होने का कोई निश्चित समय नहीं है क्योंकि यह चंद्रमा चक्र पर निर्भर करता है, लेकिन यह हर दिन होता है। स्थानीय लोग निम्न और उच्च ज्वार के समय से परिचित हैं। इस समुद्र तट पर सूर्योदय और सूर्यास्त विशेष रूप से शानदार प्रतीत होता है। चाहे समुद्र का पानी दिखे या नहीं समुद्र तट खूबसूरत ही दिखता है।

हर दिन होता है ऐसा

एलएसी विवाद पीएम मोदी की नासमझी का नतीजा : जयराम

» कांग्रेस ने भारत-चीन गश्त समझौते पर खड़े किए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत और चीन मंगलवार को पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त के लिए एक समझौते पर सहमत हुए थे। अब विपक्षी दल कांग्रेस ने एलएसी पर गश्त को लेकर केंद्र सरकार पर सवाल खड़े किए हैं। इस समझौते को लेकर कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि उसे उम्मीद है कि सैनिकों के पीछे हटने से मार्च 2020 जैसी यथास्थिति बहाल हो जाएगी। कांग्रेस ने सरकार से इस मामले में भारत के लोगों को विश्वास में लेने की बात भी कही है।

कांग्रेस पार्टी का यह बयान रूस में आयोजित हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की द्विपक्षीय वार्ता से पहले आया है। कांग्रेस महासचिव (संचार प्रभारी) जयराम रमेश ने कहा कि मोदी सरकार की इस घोषणा को लेकर कई सवाल बने हुए हैं कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पेट्रोलिंग की व्यवस्था को लेकर चीन के साथ समझौता हो गया है। विदेश सचिव ने कहा है कि इस समझौते से सैनिकों की वापसी हो रही है और अंतत: 2020 में इन क्षेत्रों में पैदा हुए गतिरोध का समाधान हो रहा है। हम आशा करते हैं कि दशकों में भारत की विदेश नीति को लगे इस झटके का सम्मानजनक ढंग से हल निकाला जा रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि सैनिकों की वापसी से पहले जैसी स्थिति बहाल होगी, जैसी मार्च 2020 में थी । कांग्रेस सांसद ने आगे कहा कि यह दुखद गाथा पूरी तरह से चीन के संबंध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नासमझी और भोलेपन का नतीजा है।

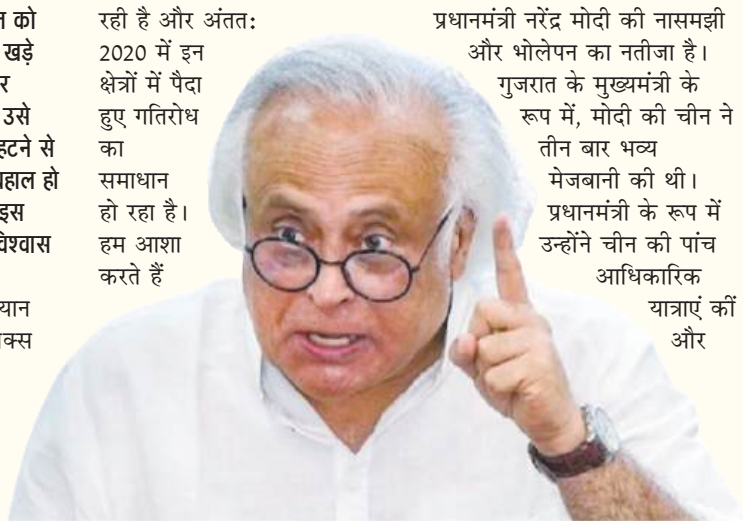

गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में, मोदी की चीन ने तीन बार भव्य मेजबानी की थी। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने चीन की पांच आधिकारिक यात्राएं कीं और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ 18 बैठकें कीं। इसमें उनके 64वें जन्मदिन पर साबरमती के तट पर बेहद दोस्ताने अंदाज में झूला झूलना भी शामिल है।

गलवान की झड़प के बाद पीएम का चीन को क्लीन चिट देना बेशर्मी

कांग्रेस नेता ने पीएम मोदी पर हमला बोलते हुए कहा कि भारत का पक्ष 19 जून 2020 को तब सबसे अधिक कमजोर हुआ जब प्रधानमंत्री ने चीन को बेशर्मी से क्लीन चिट देते हुए कहा, न कोई हमारी सीमा में घुस आया है, न ही कोई घुसा हुआ है। यह बयान गलवान में हुई झड़प के चार दिन बाद ही दिया गया था। जिसमें हमारे 20 बहादुर सैनिकों ने सर्वोच्च दान दिया था। उनका यह बयान न सिर्फ हमारे शहीद सैनिकों का घोर अपमान था बल्कि इस चीन की आक्रामकता को भी वैध ठहरा दिया। इसके कारण ही एलएसी पर गतिरोध के समय समाधान में बाधा उत्पन्न हुई। उन्होंने अपने बयान में कहा कि, इस बीच, संसद को सीमा की चुनौतियों से निपटने के लिए हमारे सामूहिक संकल्प को प्रतिबिंबित करने के लिए बहस और चर्चा करने का कोई अवसर नहीं दिया गया। पिछली सरकारों में इस तरह के गंभीर मुद्दों पर चर्चा और बहस की परंपरा रही है।

मदरसों की आड़ में हो रहा नकली नोटों का कारोबार : ओपी राजभर

» बोले- अखिलेश सरकार हिंदू-मुस्लिम दंगे कराकर करती थी राजनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

फर्रुखाबाद। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने अमृतपुर में सभा के दौरान सपा मुखिया पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि अखिलेश सरकार हिंदू-मुस्लिम दंगे कराकर राजनीति करती थी। मदरसों की आड़ में नकली नोटों का कारोबार किया जा रहा है। मोदी सरकार में अल्पसंख्यकों की तरक्की हुई है। बहराइच की घटना और वायनॉड में प्रियंका के चुनाव लड़ने पर भी उन्होंने तंज कसा।

बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि सपा सरकार में करीब 815 दंगे हुए थे। इन दंगों में लगभग 1300 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। सपा मुखिया पर कटाक्ष करते हुए कहा कि अखिलेश हिंदू-मुस्लिम और दंगे की राजनीति करते हैं। कहा कि नेपाल सीमा की ओर तराई क्षेत्रों के मदरसों में आतंक को बढ़ावा देने वाले लोग शरण पा रहे हैं। बहराइच में रामगोपाल मिश्रा की हुई हत्या के सवाल पर कैबिनेट मंत्री ने कहा कि दंगे में कोई यादव मारा जाता तो अखिलेश यादव का बयान आता। उन्हें अन्य जातियों से कोई लेना-देना नहीं है। मुसलमानों ने सपा को बोरा भर-भरकर वोट दिया, अब खाली झोला लेकर घूम रहा है। वायनॉड में प्रियंका गांधी वाड्रा चुनाव लड़ें या लड़ाएं, इससे फर्क नहीं पड़ता। जनता का रुझान सत्ता की ओर होता है।

महाराजा बिजली पासी राजकीय महाविद्यालय में नैक मूल्यांकन हुआ सम्पन्न

» समिति के सफलतापूर्वक निरीक्षण पर प्राचार्य ने दी बधाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय आशियाना में नैक मूल्यांकन समिति का दो दिवसीय दौरा संपन्न हो गया। दूसरे दिन प्राचार्य प्रो.सुमन गुप्ता एवं प्राध्यापकों ने पुष्पगुच्छ भेंटकर नैक मूल्यांकन समिति का स्वागत किया गया। नैक समिति ने सबसे पहले महाविद्यालय के कार्यालय पहुंचकर पत्रावली रख-रखाव, बजट, वेतन संबंधी फाइलों का विधिवत निरीक्षण किया।

इस दौरान नैक पीयर टीम के सदस्यों ने कार्यालय के कर्मचारियों को पत्रावली रख-रखाव संबंधी कुछ सुझाव दिए। इसी क्रम में समाजशास्त्र एवं भूगोल विभाग का भी निरीक्षण कर जानकारी एकत्र की

तत्पश्चात क्रीड़ा विभाग की पत्रावली एवं खेल मैदान का बारीकी से निरीक्षण कर कुछ सुझाव दिए। महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों से संवाद कर उनकी समस्याओं को जाना और फीडबैक प्राप्त किया साथ ही अकादमिक क्षेत्र में उन्नति हेतु सुझाव दिए। समापन अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो.सुमन गुप्ता ने प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों को नैक मूल्यांकन समिति द्वारा सफलतापूर्वक निरीक्षण करने के उपरांत हर्ष व्यक्त करते हुए सभी को बधाई दी।

हम सत्ता पर कब्जा करने जा रहे: राउत

» बोले- सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है और महा विकास अघाड़ी के बीच कोई मनभेद या मतभेद नहीं हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के मतदान में अब कुछ ही दिनों का समय बचा है, लेकिन अभी तक न तो सत्ताधारी महायुति गठबंधन और न ही विपक्षी महा विकास अघाड़ी गठबंधन की तरफ से सीटों के बंटवारे का आधिकारिक एलान किया गया है। जब इसे लेकर शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि आज शाम चार बजे तक सभी उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी जाएगी।

संजय राउत ने कहा कि महा विकास अघाड़ी का सीट बंटवारे का कोई फार्मूला नहीं है। महा विकास अघाड़ी के उम्मीदवारों की सूची में इसलिए देरी हो रही है क्योंकि

हम सत्ता बनाने जा रहा है। हम सत्ता पर कब्जा करने जा रहे हैं। बाकी लोग विपक्ष में बैठने वाले हैं, हम सत्ता में बैठेंगे। इसलिए सोच विचार कर उम्मीदवारों का चयन किया जा रहा है। गठबंधन के बीच कल रात सब कुछ तय हो गया है और आज शाम चार बजे उम्मीदवारों की पूरी लिस्ट जारी हो जाएगी। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है और हमारे बीच कोई मनभेद या मतभेद नहीं हैं। जब संजय राउत से पूछा गया कि क्या सीट बंटवारे के तहत शिवसेना यूबीटी 100 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ेगी? तो इसके जवाब में संजय राउत ने कहा कि देश हमेशा से चाहता है कि शिवसेना यूबीटी शतक लगाए। हमारे अंदर वो क्षमता भी है और हम ऐसा कर सकते हैं। मुंबई में क्रिकेट बहुत देखा जाता है और शतक की अहमियत भी बहुत होती है।

कांग्रेस को मिल सकती हैं सबसे ज्यादा सीटें

सूत्रों के अनुसार, महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी के बीच हुए सीट बंटवारे के तहत राज्य में कांग्रेस सबसे अधिक सीटों पर चुनाव लड़ सकती है। बंटवारे में सबसे कम सीटें शरद पवार की पार्टी को मिलने का अनुमान है। वहीं शिवसेना (यूबीटी) को मुंबई में सबसे अधिक सीटें मिलने की उम्मीद है। सूत्रों ने बताया कि महाराष्ट्र विधानसभा की 288 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस 103 से 108 सीटों पर, जबकि शिवसेना (यूबीटी) 90 से 95 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है। वहीं राकांपा (शरद पवार) को 80-85 सीटें देने पर सहमति बनी है। सपा और आम आदमी पार्टी जैसे अन्य सहयोगियों को 10 से कम सीटों में निपटाया जाएगा।

दूसरे टेस्ट में न्यूजीलैंड ने की मजबूत शुरूआत

» पहले दिन लंच तक न्यूजीलैंड ने दो विकेट पर बनाये 92 रन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पुणे। गुरुवार से भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबला पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। कीवी टीम पहले ही सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर चुकी है। अब उसकी नजर सीरीज में अजेय बढ़त हासिल करने की है। वहीं, टीम इंडिया सीरीज में बराबरी हासिल करने उतरी है। अगले दोनों मुकाबले जीतकर टीम इंडिया विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए अपने समीकरण को आसान बनाना चाहेगी।

न्यूजीलैंड पहले दिन सधी हुई

शुरूआत की है। डेवोन कॉनवे और कप्तान टॉम लाथम ने अब तक अच्छी बल्लेबाजी की। लंच तक अपनी पहली पारी में दो विकेट गंवाकर 92 रन बना लिए हैं। कीवी कप्तान टॉम लाथम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। अश्विन ने इस मैच के अपने पहले ही ओवर में लाथम को आउट कर न्यूजीलैंड को पहला झटका दिया। लाथम 15 रन बना सके। इसके बाद अश्विन ने विल यंग को भी पवेलियन भेजा। वह 18 रन बना सके। फिलहाल डेवोन कॉनवे और रचिन रवींद्र क्रीज पर हैं। कॉनवे 11वें अर्धशतक से तीन रन दूर हैं, जबकि रचिन पांच रन बनाकर क्रीज पर हैं।

भारत ने टीम में किये तीन बदलाव

भारत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट की टीम में तीन बदलाव किये हैं। पहला के एल राहुल की जगह शुभमन गिल की वापसी हुई है। दूसरा कु लदीप यादव की जगह वाशिंगटन सुंदर को जगह मिली है। वहीं आउट ऑ फ फार्म चल रहे मोहम्मद सिराज की जगह आकाश दीप को मौका दिया गया है।

बता दें कि न्यूजीलैंड को 32 के स्कोर पर पहला झटका लगा। अश्विन ने इस मैच के अपने पहले ही ओवर में कप्तान टॉम लाथम को एल्बीडब्ल्यू आउट किया। वहीं न्यूजीलैंड को 76 के स्कोर पर दूसरा झटका लगा। जब अश्विन ने विल यंग को विकेटकीपर ऋषभ पंत के हाथों कैच कराया। वह 45 गेंद में 18 रन बना सके।

महाराष्ट्र चुनाव में 85-85 सीट पर लड़ेगी महाविकास अघाड़ी

» हमारी एकता लोगों के सामने आनी चाहिए, हम छोटी पार्टियों को भी सीटें देंगे : राउत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

महाराष्ट्र। बीते कई दिनों से सीट बंटवारे को लेकर महाविकास अघाड़ी की बातचीत नतीजे पर पहुंच गई, महा विकास अघाड़ी गठबंधन जिसमें कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार गुट) और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) शामिल हैं आगामी महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में 85-85 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। शिवसेना (यूबीटी) के संजय राउत ने पुष्टि की। उन्होंने कहा कि एमवीए की एकता लोगों के सामने आनी चाहिए और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव बिना किसी बाधा के होने चाहिए।

उन्होंने कहा कि कल एक्स पर एक लिस्ट आई थी, उसमें सुधार करना पड़ेगा क्योंकि उसमें जरूरत है आज किया जाएगा। संजय राउत ने कहा कि तीनों पार्टियों के लिए 85 सीटों पर हम आम सहमति पर पहुंच गए हैं और आज शाम तक बाकी विधानसभा क्षेत्रों में काम पूरा हो जाएगा। हमारी छोटी पार्टियों को भी सीटें देनी होंगी। उस पर भी हम चर्चा करेंगे।

उन्होंने कहा कि हम कल शरद पवार के साथ बैठे और उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया। हम चाहते हैं कि यह विधानसभा चुनाव बिना किसी बाधा के हो। हमारी एकता लोगों के सामने आनी चाहिए। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है, जो 20 नवंबर को होगा। महाराष्ट्र विधानसभा में 288 सीटें हैं। नतीजे 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे।

अभी महाराष्ट्र में पार्टियों की ये है स्थिति

महाराष्ट्र की 288 विधानसभा सीटों के लिए 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। नतीजे 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। पिछले चुनाव में बीजेपी को 105, शिवसेना को 56, एनसीपी को 54 और कांग्रेस को 44 सीटें मिली थीं। हालांकि, चुनाव के बाद शिवसेना एनडीए से अलग हो गई और उसने एनसीपी-कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बना ली। शिवसेना के उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बने। जून 2022 में शिवसेना में आंतरिक कलह हो गई। इसके बाद एकनाथ शिंदे ने पार्टी के 40 विधायकों को तोड़ दिया। एकनाथ शिंदे बीजेपी के समर्थन से मुख्यमंत्री बन गए। अब शिवसेना दो गुटों में बंट चुकी है, शरद पवार की एनसीपी भी दो गुट- शरद पवार और अजित पवार में बंट गई है।

राजस्थान उपचुनाव का संग्राम

पांच सीटों पर बीजेपी-कांग्रेस में टक्कर, दो पर मुकाबला त्रिकोणीय

» बीजेपी-कांग्रेस दोनों पार्टियों ने खोले अपने पत्ते

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान की सात विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनावों के लिए कांग्रेस ने सभी सातों सीटों पर प्रत्याशी घोषित कर दिए हैं। वहीं भाजपा छह सीटों पर प्रत्याशियों के नाम का ऐलान पहले कर चुकी थी जिसके बाद गुरुवार को एक बची हुई सीट पर भी बीजेपी ने प्रत्याशी की घोषणा कर दी। बीजेपी ने चौरासी विधानसभा सीट से कारीलाल ननोमा को प्रत्याशी बनाया है।

बता दें कि सलूंबर में भाजपा और कांग्रेस दोनों ने महिला उम्मीदवारों पर दांव खेला है। उपचुनाव में प्रदेश की पांच सीटों पर बीजेपी और कांग्रेस के बीच मुकाबला देखने को मिलेगा। वहीं, चौरासी और खींवसर सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिल सकता है। बीजेपी ने दौसा से जगमोहन मीना, सलूंबर से शांता देवी मीना, झुंझनूं से राजेन्द्र भांबू, रामगढ़ में सुखवंत सिंह, खींवसर से रेवतराम डांगा और देवली-उनियारा से राजेन्द्र गुर्जर को चुनावी रण में उतारा है। वहीं, अब शेष बची चौरासी सीट पर भी उम्मीदवार का ऐलान कर दिया है। इधर, कांग्रेस ने दौसा से दीनदयाल बैरवा, सलूंबर से रेशमा मीणा, झुंझुनूं से अमित ओला, रामगढ़ से आर्यन जुबेर खान, खींवसर से रतन चौधरी, देवली उनियारा से कस्तूर चंद मीना और चौरासी से महेश रोत को टिकट दिया है। बता दें कि कांग्रेस ने राजस्थान में गठबंधन से किनारा कर लिया है और अपने दम पर उपचुनाव लड़ने के लिए ताल ठोक दी है। भारतीय आदिवासी पार्टी चौरासी और सलूंबर सीट से चुनाव लड़ रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और बीएपी मिलकर लड़ी थी लेकिन उपचुनाव में एक दूसरे के खिलाफ किस्मत आजमा रही हैं।

फोटो :4 पीएम

धरना अखिल भारतीय प्रगतिशील महिला एसोसिएशन (एपवा) की महिला समर्थकों ने महिलाओं पर लगातार बढ़ती हिंसा के विरोध में चारबाग रेलवे स्टेशन पर निकाला मार्च।

अयोध्या के एडीएम की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

» सुरजीत सिंह का शव कोतवाली नगर के सुरसरि कालोनी सिविल लाइन में उनके कमरे में मिला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अयोध्या। उत्तर-प्रदेश के अयोध्या से चौंका देने वाली ख़बर सामने आई है। अयोध्या में एडीएम कानून-व्यवस्था सुरजीत सिंह की संदिग्ध परिस्थितियों में गुरूवार को मौत हो गई है। जानकारी के मुताबिक एडीएम का शव कोतवाली नगर के सुरसरि कालोनी सिविल लाइन में उनके कमरे में पाया गया है।

मौत के कारणों की जांच की जा रही है। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर मण्डलायुक्त, जिलाधिकारी समेत जिला प्रशासन के सभी अधिकारी पहुंचे। आपको बता दें कि एडीएम कानून व्यवस्था सुरजीत सिंह कोतवाली नगर के सुरसरि कालोनी सिविल लाइंन में रहते थे। उनके घर के एक कमरे की फर्श पर चारों तरफ खून फैला दिखा है।

पुलिस मामले की जांच में जुटी

हालांकि मामले में पुलिस अभी कुछ भी कहने को तैयार नहीं है। सूत्रों के मुताबिक मौके पर पुलिस के आला अधिकारी और फॉरेंसिक टीम मौके पर मौजूद है, मौत की वजह का पता नहीं चल सका है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। जिले के एक आलाधिकारी की मौत होने से अयोध्या में हड़कंप मचा हुआ है।

छेड़छाड़ मामले में दो साधुओं की हुई पिटाई

» अयोध्या में युवक ने साधुओं को चप्पलों से जमकर पीटा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अयोध्या। धर्म नगरी अयोध्या से एक शर्मशार कर देने वाला एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है, अयोध्या में एक तरफ जहां बड़े-बड़े साधु संत हैं जिनको लोग भगवान की तरह पूजते हैं, उसी अयोध्या से एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक युवक ने 2 साधुओं को चप्पलों से जमकर पीटा। पीटने वाले युवक का आरोप है कि साधु एक लड़की से छेड़छाड़ कर रहा था और विरोध करने पर मारपीट पर उतारु हो गया।

जिसके बाद युवकों ने साधुओं को जमकर पीटा। वायरल वीडियो में दिख रहा है कि एक साधु बुलेट पर बैठ रहा है वहीं, कुछ युवक साधु को खींच कर पीट रहे हैं, इसी बीच साधु जमीन पर गिर जाता है। इसके बाद कुछ युवक साधु को चप्पलों से पीटते दिखते हैं। युवक कहते सुनाई देते हैं कि लड़की को छेड़ता है, शर्म नहीं आती।

मामले में क्या बोली पुलिस

यह पूरा मामला कैंट थाना क्षेत्र के गुप्तारघाट की बताई जा रही है, भीड़ बढ़ने पर दोनों साधु भाग जाते हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है, वीडियो कब का है, इसके बारे में भी जानकारी सामने नहीं आई है। वायरल वीडियो की जांच कैंट थाना प्रभारी अमरेंद्र सिंह कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

सिद्धार्थनगर में दरिंदों ने 4 साल की मासूम को बनाया हवस का शिकार

सिद्धार्थनगर। उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले से दर्दनाक घटना सामने आई है। जहां हवस के भूखे दरिंदों ने मात्र 4 साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया है। परिजनों को बच्ची गांव के बाहर एक तालाब के पास पड़ी मिली। पुलिस इस पूरे मामले में जांच में जुट गई है। मामला सिद्धार्थनगर जिले के इटवा थाना क्षेत्र के केवटलिया गांव का है. जहां 4 वर्षीय पीड़ित मासूम के परिजनों ने बताया कि बीती रात बच्ची अपने मां के साथ बिस्तर पर सो रही थी। सुबह करीब 3 बजे जब पीड़ित के पिता फजर की नमाज पढ़ने के लिए उठे तो उन्होंने बच्ची को बिस्तर पर नहीं पाया। बच्ची की मां ने बच्ची को शौच के लिए उठकर जाने की बात कहकर घर में ही खोजने लगी। परिजन घर के साथ-साथ उसे आसपास भी खोजने लगे, मासूम पीड़ित के पिता ने बताया कि गांव के बाहर स्थित एक तालाब के पास जब वह आवाज लगा रहे थे, तब अचानक उनको बच्ची के रोने की आवाज सुनाई दी, जब वह बच्ची के नजदीक पहुंचे तो बच्ची को देखकर उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।